- Research Papers Published in Peer-Reviewed Journals/ Proceeding & Other

	Name of Faculty	Dr. Akshay Bhosale
	Name of Department	Hindi
	Academic Year	2023-24

Sr. No.	Name of Research Papers Book/Edited Book/ Chapter	Name of the Peer-Reviewed Journal and Publication	Page No
1.	Bhasha Proudyogiki : Chintan Aur Rojagar	B. Aadhar Multidisciplinary International Research Journal, ISSN - 2278-9308, 2023-24	280 – 284

Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March- 2024

ISSUE No - (CDLXIII) 463

75th Years of Indian Economy: Achievements and Challenges

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. R. K. Shanediwan
Principal
Shri Shahaji Chhatrapati
Mahavidyalaya, Kolhapur

Editor
Prof. Dr. Mrs. S. S. Rathod
Head, Deptt. of Economics,
Shri Shahaji Chhatrapati
Mahavidyalaya, Kolhapur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar Publications

ISSN : 2278-9308
March, 2024

	प्रा. डॉ. संजय शिवाजी ओमासे	
46	भारतातील मानव संसाधन विकास सहा.प्रा.सोनाली काशिनाथ गवळी	216
47	विकास पर्यावरण आणि शाश्वतता सहा. प्रा. सुषमा युवराज पाटील	220
48	भारतातील महिला सक्षमीकरण आणि महिला साक्षरता प्रा. किरण सदाशिव कांबळे	225
49	अमृतमहोत्सवी भारतीय अर्थव्यवस्था : एक दृष्टीक्षेप ! श्री. चंद्रकांत भूपाल पाटील ,प्राचार्य. डॉ.विजयकुमार पाटील	229
50	भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील पर्यावरणीय समस्या प्रा. वर्षा संदीप पाटील	236
51	नवीन शैक्षणिक धोरण आणी उच्च शिक्षणाचे आंतरराष्ट्रीयीकरण डॉ. आर. डी. मांडणीकर	241
52	सातारा जिल्ह्यातील भूमी उपयोजन कार्यक्षमतेचा अभ्यास श्री. तेजस चव्हाण ,डॉ. डी. एल. काशिद-पाटील ,श्री. गौरव काटकर	246
53	भारतीय अर्थव्यवस्थेची सद्यस्थिती आणि आव्हाने डॉ. विजय जालिंदर देठे	252
54	मौजे आगर मधील जाधव पोल्ट्री फार्म : एक आर्थिक चिकित्सक अभ्यास प्रा.डॉ. प्रभाकर तानाजी माने	256
55	डॉ.शां.ग.महाजन यांचे ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र साहित्यातील येागदान सौ.नीता पाटील	261
56	उच्च शिक्षणातील सल्लागार, मार्गदर्शक, दीपस्तंभ: प्रा. सुधाकर मानकर सर. डॉ.पांडुरंग बाळकृष्ण पाटील	268
57	भारत में खेल विकास के लिए योजनाएँ **Capt. Dr. Prashant Bibhishan Patil**	271
58	आजाद भारत की आर्थिक विषमता और जनवादी कवि 'धूमिल' प्रो.डॉ.सरोज पाटील	273
59	आर्थिक विपन्नता के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास 'बरखा रचाई' प्रा. डॉ. सारिका राजाराम कांबळे	277
60	भाषा प्रौद्योगिकी : चिंतन और रोजगार डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले	280
61	Regional Trend Of Milk Production In Maharashtra State Aishwarya Hingmire **Mayur Goud, Dr. D. L. Kashid -Patil Dr. N. D. Kashid- Patil**	285
62	Micro Study of Demographic Characteristics of Gaganbavda Tehsil in Kolhapur District **Mr. Shubham Tanaji Patil, Dr. D. L. Kashid-Patil**	290
63	Impact Of Marxism On English Literature **Mrs. S. K. Desai**	299
64	Charting the Course: Navigating Challenges and Opportunities in India's Economic Development Landscape **Ms.Komal Suresh Jagtap**	301
65	कोल्हापूर जिल्ह्यातील निवडक शेतीक्षेत्रातील मृदा परीक्षणाचा चिकित्सक अभ्यास प्रा. गौरव काटकर,डॉ. सौ. एन. डी. काशिद-पाटील,प्रा. तेजस चव्हाण	305

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.632, Issue NO, (CDLXIII) 463
ISSN : 2278-9308
March, 2024

भाषा प्रौद्योगिकी : चिंतन और रोजगार

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले
सहायक आचार्य,हिंदी विभाग,श्री शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, कोल्हापुर

मूल शब्द :
भाषा, प्रौद्योगिकी, तकनीक, विस्तृत कड़ी, सम्प्रेषण, मोबाईल, इंटरनेट, रोजगार, दृष्टि बाधित, प्राकृतिक, मशीन, गतिविधि, विकसित आदि।

प्रस्तावना :

- भाषा :स्वरूप
- प्रौद्योगिकी : स्वरूप
- भाषा प्रौद्योगिकी : अवधारणा
- भाषा प्रौद्योगिकी : उपयोगिता
- भाषा में प्रौद्योगिकी : चिंतन
- भाषा तकनीक का उपयोग
- भाषा प्रौद्योगिकी : रोजगार
- निष्कर्ष
- सन्दर्भ ग्रन्थ

प्रस्तावना :

आज 'हिंदी भाषा' विश्व भाषा बन चुकी है। वर्तमान समय सूचना क्रांति का समय है, जिसमें हिंदी भाषा ने अपना औधा बनाए रखा है। पूरे विश्व में भारत के साथ तकरीबन 154 देशों में हिंदी अध्ययन अध्यापन निरंतर शुरू है। इसी हिंदी ने वैश्विक विषय 'language technology' को भी अपने में समाहित किया है। फलतः 'हिंदी भाषा', 'हिंदी साहित्य' एवं 'भाषा प्रौद्योगिकी' से जुडकर हिंदी का बना अधुनातन स्वरूप छात्रों का तकनीकी युग में बेहतरीन भविष्य की संभावना को बनाए उपस्थित है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुडा यह विषय प्राकृतिक भाषा के संसाधन के साथ मरती जा रही बोलियां, भाषाओं के लिए संजीवनी के रूप में प्रस्तुत होता है। विश्व में कई सारी भाषाएं बोली जाती है। हर भाषा की अपनी प्राकृतिक व्यवस्था अलग-अलग होती है। मनुष्य ने पाया हर ज्ञान भाषा द्वारा प्रकट होता है। संगणकीय भाषा विज्ञान से जुडा यह विषय मानव भाषाओं के ज्ञान को तकनीकी क्षेत्र में अनुप्रयोग करानेवाला शास्त्र माना जाता है।

भाषा स्वरूप :

'भाषा' संस्कृत के 'भाष्' धातु से निष्पन्न है, जिससे तात्पर्य है - मनुष्य की वाणी, स्पष्ट वाणी, व्यक्त वाणी, बोलना या कहना। पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' में भाषा के संदर्भ में कहा है - 'व्यक्तवाचां समुच्चारणे' अर्थात् 'मनुष्य के उच्चारण अवयवों द्वारा जिस सार्थक ध्वनि का प्रयोग होता है, वही भाषा है।' मनुष्य के विचार -विनमय का साधन भाषा है। मनुष्य के हर प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति का मध्यम भाषा ही है। अतः हम भाषा की परिभाषा देखते है - डॉ. मंगलदेव शास्त्री -" भाषा मनुष्यों की उस चेष्टा या व्यापार को कहते है, जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयों से उच्चारण किए गए वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते है।"[1]

डॉ. भोलानाथ तिवारी के मतानुसार -" भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चारित मूलतः प्रायः यादृच्छिक ध्वनि प्रतिकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान – प्रदान करते हैं।"[2]

भाषा के कई प्रकार हमारे सामने आते है जैसे – मूल भाषा, परिनिष्ठित भाषा, विभाषा, अपभाषा, विशिष्ट भाषा(व्यावसायिक भाषा),कूट भाषा, कृत्रिम भाषा, मिश्रत भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा आदि।

भाषा परिचय बहुत विस्तृत कड़ी है, जिसे छोटि –बौछारे रूप में समझना एक असफल प्रयास होगा किंतु मूल विषय से जुड़ने के लिए हम इतना आवश्यक समझकर आगले बिंदु की ओर चलते है। हमारा अगला बिंदु है 'प्रौद्योगिकी परिचय'

प्रौद्योगिकी : स्वरूप

आज की दुनिया में हम प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) को बहुत तेजी से बढ़ते हुए देख रहे है, यह हमारी जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा बन चुकी है। प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) के कारण ही हम बहुतसी आधुनिक सुविधाओं का उपयोग कर पा रहे है, साथ ही प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) हमारे काम करने के तरीके को बदल रही है और ज्यादा आसान बना रही है। दुनिया को इस नए स्तर पर लाने में प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) का एक बड़ा योगदान है। तो आइए प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) के बारे में जानते है ।जब भी हम प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) के बारे में कुछ सोचते है तो हमारे दिमाग में कंप्यूटर, स्मार्टफोन आदि आते है, लेकिन हकीकत में टेक्नोलॉजी का मतलब इन सब से कई ज्यादा है । आजकल आधुनिक प्रौद्योगिकी जैसे इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि ने लोगों के बीच संचार में आने वाले मुश्किलों को आसान बना दिया है। आजकल आधुनिक टेक्नोलॉजी जैसे इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि ने लोगों के बीच संचार में आने वाले मुश्किलों को आसान बना दिया है।

टेक्नोलॉजी का मतलब आसान शब्दों में यह है कि जिसका उपयोग करके किसी भी काम को आसान या सुविधाजनक बनाया जाता है, वह टेक्नोलॉजी कहलाती है । Technology को मनुष्य के हाथों की एक कला माना जा सकता है । टेक्नोलॉजी के अंदर किसी वैज्ञानिक जानकारी का एक उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता है, जिसे काम में लाने पर बहुत सी चीजे आसान बनाई जा सकती है और कई सारी जानकारियां देखी जा सकती है। हम टेक्नोलॉजी का उपयोग हमारे दैनिक जीवन में कार्यों को आसान बनाने के लिए करते है। आज हम टेक्नोलॉजी के बिना कुछ देर भी नही रह पाऐंगे, आज स्मार्टफोन, कंप्यूटर , इंटरनेट, टेलीविजन आदि हमारी एक बड़ी जरूरत बन गए है।

टेक्नोलॉजी को हिन्दी मे प्रौद्योगिकी कहा जाता है। प्रौद्योगिकी का मतलब विज्ञान का एक तरह से उपयोग करना भी होता है, जो किसी उद्देश्य के लिए किया जाता है। प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) के अंदर किसी सर्विस या प्रोडक्ट के निर्माण के लिए तकनीक, कौशल (स्किल्स), तरीके , प्रक्रिया आदि चीजे शामिल होती है। इन सब को किसी मशीन या उपकरण में स्थापित करके ऐसे काम आसानी से किए जा सकते है, जिस काम को करने में इंसान को कठिनाई होती है , या हमे उस कार्य को करने का ज्ञान नही होता।

कंप्यूटर के अविष्कार बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है और इसने पूरी दुनिया को बदल दिया। कंप्यूटर के साथ डेटा को संभालना, आदान प्रदान, रिसर्च करना आदि अनेक कार्यों में आसानी आ गई।

भाषा प्रौद्योगिकी : अवधारणा

मनुष्य की दुनिया जटिल सूचना माध्यमों से गुजर रही है। ऐसे में माध्यमों का प्रयोग मानव भाषा में किया जाता है, यह विशेष बात है। इन चीजों का प्रयोग करने हेतु उन्हें बनाने से लेकर उनका प्रयोग सीखने तक की प्रक्रिया करनी पडती है जो 'मानव भाषा' से जुडी है इन सब प्रक्रियाओं से जुड़ा मामला 'भाषा प्रौद्योगिकी' कहलाता है। दुनिया की कोई भी भाषा मौखिक और लिखित रूप में प्राप्त होती है। भाषा का मौखिक रूप संप्रेषण की सबसे पुरानी और प्राकृतिक विधा है, जबकि भाषा का मौखिक रूप थोडा जटिल है किन्तु इसी लिखित रूप के कारण

मानवीय भाषा ज्ञान लिखित ग्रन्थों में संग्रहित है, जो प्रसारित भी होता रहा है। हालांकि मशीन सिस्टम मानव भाषिक क्षमता से बहुत दूर है लेकिन उसके पास कई संभावित अनुप्रयोग आवश्य है। अब लक्ष्य ऐसे सॉफ्टवेयर (परावस्तुए) तैयार करना है, जिसमें मानव भाषा की प्राकृतिक क्षमता जुड़ी हो । अतः हम पुनः कह सकते है कि वस्तुएँ अथवा चीजों को बनाने से लेकर उनका बजार में विपनन कर उसके प्रयोग तक का कार्य भाषा प्रौद्योगिक से जुड़ा है । भाषा प्रौद्योगिक का अवलोकन करते हुए कैंब्रिज विश्वविद्यालय के language technology के विशेषज्ञ हंस उसजकोरित जी कहते है कि भाषा प्रौद्योगिकी 'ज्ञान तकनीक', 'भाषण प्रौद्योगिकी' और 'पाठ प्रौद्योगिकी' से जुड़ा है, और भाषण एवं पाठ प्रौद्योगिकी मल्टीमिडिया और बहुपद्धतिपरक प्रौद्योगिकी से जुड़ा है। स्पष्ट है कि भाषा प्रौद्योगिकी टेकनिक, टेक्नोलॉजी से जुड़ा अंतरानुशासनिक विषय है ।

अंततः सार रूप में हम ये कह सकते है, प्रौद्योगिक एक ऐसी गतिविधि के रूप में सामने आती है जो मानव संस्कृति में परिवर्तन लाती जा रही है । प्रौद्योगिकी के उदय के कारण मानव बातचीत (संप्रेषण) की बाधाएँ कम हुई । फलतः एक नुतन विषय 'भाषा प्रौद्योगिकी' दुनिया के सामने आया । मानव भाषाओं के ज्ञान का उपयोग कर तकनीकी क्षेत्रों में अनुप्रयोग हेतु स्वचालित प्रणालियों (Automatic system) के विकास से जुड़ा । 'भाषा प्रौद्योगिकी' इतना विस्तृत विषय है कि जो संगणक एवं अन्य मशीनों को भी अपने अंदर समाहित करता है । भाषा प्रौद्योगिकी एक विशाल विषय बना है ।

भाषा प्रौद्योगिकी : उपयोगिता

मशीन लर्निंग, भाषाविज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, भाषा तकनीक के अनुप्रयोग दूरगामी और व्यापक हैं। पिछले कुछ वर्षों में प्रौद्योगिकी में तेजी से प्रगति देखी गई है, जिसने हमारे जीने और अपने आस-पास की दुनिया को समझने के तरीके को प्रभावित किया है। उन्होंने समय के साथ हमारी सीखने की पद्धतियों को भी बढ़ाया है। भाषा सीखने के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है जिसे प्रौद्योगिकी के आगमन और इसके विकास से लाभ हुआ है। भाषा प्रौद्योगिकी सीखने का एक तेजी से बढ़ता बहु-विषयक क्षेत्र है। भाषा प्रौद्योगिकी एक तकनीकी आविष्कार है जिसने साबित कर दिया है कि मशीनें मानव भाषाओं की व्याख्या करने तक ही सीमित नहीं हैं। भाषा प्रौद्योगिकी ने मशीन लर्निंग, भाषा विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे अन्य क्षेत्रों का विकास और समर्थन किया है और इसके अनुप्रयोग व्यापक हैं। राम बंसल जी के मतानुसार "वास्तविक कर्मों का आधार सूचनाएँ होती हैं जिन्हें कंप्यूटर अब सरलता से, शीघ्रता से, एवं सटीकता से संस्कारित कर सकते हैं।"[5] अतः यहीं कारण हैं कि मनुष्य के सब कर्मों का आधार संगणक है और सब कर्म बगैर भाषा के संपन्न नहीं हो सकते। इसीकारण वर्तमान समय में भाषा प्रौद्योगिकी में रोजगार की सम्भावनाएँ बढ़ रहीं हैं।

मोबाइल सॉफ्टवेयर और एप्लिकेशन की मदद से शब्दों और वाक्यों का अनुवाद करना कोई हालिया विकास नहीं है। न ही यह बहुत सटीक है क्योंकि मानव भाषाएँ जटिल हैं और इसमें बहुअर्थी शब्द शामिल हैं जिससे मशीनों के लिए स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में उनका सटीक अनुवाद करना मुश्किल हो जाता है। लेकिन भाषा तकनीक का आविष्कार हमारे स्मार्ट उपकरणों के लिए किसी अन्य भाषा में हमारे शब्दों के अर्थ और उचित संदर्भ की सटीक व्याख्या करना संभव बनाता है। भाषा तकनीक मशीनों के लिए यह संभव बनाती है कि कोई व्यक्ति जो बोलता है उसका सही अर्थ समझ सके।

भाषा प्रौद्योगिकी का सार मौखिक और लिखित रूप में मानव भाषाओं के कम्प्यूटेशनल प्रसंस्करण पर केंद्रित है। भाषा प्रौद्योगिकी कई अनुप्रयोगों का उपयोग करती है जैसे इंटरनेट सर्च इंजन, बोली जाने वाली भाषा संवाद प्रणाली, मशीनी अनुवाद इत्यादि। आने वाले वर्षों में, दस्तावेजों और पाठ को अर्थ के साथ अंशों में अनिवार्य रूप से निकालने के लिए अच्छी तरह से स्थापित प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण तकनीकों और उन्नत तरीकों की आवश्यकता होगी।

और संदर्भ बरकरार है. भाषा तकनीक निकट भविष्य में एक आशाजनक अनुसंधान मार्ग है और तेजी से विकसित हो रहा है।

भाषा में प्रौद्योगिकी : चिंतन

अब जब हम जानते हैं कि भाषा प्रौद्योगिकी क्या है, इसपर अधिक चिंतन करने पर इसके लाभ सामने आते है। भाषा तकनीक मनुष्यों को किसी इंटरफ़ेस या कंप्यूटर जैसे माध्यम की मदद के बिना रोबोट के साथ बातचीत करने में सक्षम बना सकती है जो उन्हें मशीनी भाषा में आदेश देता है। आप कंप्यूटर कीबोर्ड, माउस या यहां तककि रिमोट कंट्रोल के बिना रोबोट के साथ संवाद करने के लिए बोली जाने वाली भाषा तकनीक का उपयोग कर सकते हैं। कोई भी भाषा तकनीक का उपयोग करके उपकरणों को नियंत्रित कर सकता है; उदाहरण के लिए, स्मार्ट घरों में प्रकाश व्यवस्था को वॉयस कमांड से चालू और बंद किया जा सकता है।

भाषा तकनीक दृष्टिबाधित लोगों के लिए फायदेमंद है। दृष्टिबाधित लोगों को लगातार टेक्स्ट-टू-स्पीच डिक्टेशन सिस्टम और स्क्रीन रीडर पर निर्भर रहना पड़ता है, और कम सुनने वाले व्यक्तियों के लिए ऑडियो को टेक्स्ट में परिवर्तित करना महत्वपूर्ण है। भाषा तकनीक तब भी फायदेमंद हो सकती है जब कोई व्यक्ति ड्राइविंग जैसी किसी अन्य गतिविधि में शामिल हो। भाषा तकनीक से जुड़ी वाक् पहचान प्रणाली लोगों के रोजमर्रा के जीवन को बहुत आसान बना सकती है। भाषा तकनीक में प्रगति से उत्पादकता में वृद्धि हुई है और उपयोग में आसानी हुई है, विशेषकर भाषण अनुवाद और भाषा सीखने के क्षेत्र में। भाषा तकनीक के साथ संचार बहुत तेज़ हो गया है, और सीखने के प्रमुख पहलुओं में काफी सुधार हुआ है।

भाषा तकनीक का उपयोग

चूंकि आरबीएमटी (नियम-आधारित मशीन अनुवाद) और एसएमटी (सांख्यिकीय मशीन अनुवाद) विधियां बहुत सफल साबित नहीं हुई हैं, तकनीकी कंपनियों ने प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है, जिसे एनएलपी भी कहा जाता है। एनएलपी मूल रूप से कंप्यूटर को इंसानों की तरह ही पाठ और बोली जाने वाली भाषा को समझने की अनुमति देता है। यह कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान, मशीन लर्निंग और गहन शिक्षण को जोड़ती है। और यह सब एआई को इरादे और यहां तक कि भावना के साथ भाषा के पूरे अर्थ को समझने में मदद करता है। एनएलपी शब्दों के संदर्भ को देखता है और अनुवाद के दौरान पाठ को बेहतर ढंग से स्थानीयकृत करने में मदद करता है। हालाँकि सूचना क्षेत्र में नीतियों, करों, विनियमों आदि के संदर्भ में वैश्वीकरण के साथ अभी भी मुद्दे हैं, फिर भी निश्चित रूप से एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर प्रभावी ढंग से महारत हासिल कर ली गई है और वह है भाषा प्रौद्योगिकी। भाषा तकनीक और मशीनी अनुवाद प्रौद्योगिकी के दो पहलू हैं जिन्हें इस हद तक परिष्कृत किया गया है कि एक ही परिवार के पेड़ से उत्पन्न होने वाली भाषाएँ - उदाहरण के लिए, लैटिन वर्णमाला प्रणाली में अपनी उत्पत्ति वाली सभी भाषाओं का अनुवाद सहजता से और सटीक रूप से किया जा सकता है।1. बोली जाने वाली भाषा संवाद प्रणाली - मौखिक भाषा संवाद प्रणालियाँ किसी व्यक्ति को कंप्यूटर जैसी मशीन से बात करने में सक्षम बनाती हैं। यह आमतौर पर टेलीफोन जैसे उपकरण के माध्यम से किया जाता है। इस कार्रवाई का उद्देश्य किसी प्रकार का लेन-देन करना या जानकारी प्राप्त करना है। इसका एक अनुप्रयोग किसी मशीन से बात करना और उसे स्टॉक और शेयरों को खरीदने या बेचने के लिए निर्देशित करना है। गाड़ी चलाते समय मार्ग दिशा-निर्देश प्राप्त करना भी मौखिक भाषा संवाद प्रणाली का एक रूप है।2.प्रश्न उत्तर प्रणाली -कोई भी व्यक्ति स्मार्ट वेब-आधारित सिस्टम की सहायता से किसी डिवाइस से जानकारी मांग सकता है। एनएलपी तकनीकों और प्राकृतिक भाषा निर्माण विधियों का उपयोग करके, डिवाइस पूरी तरह से तैयार किए गए उत्तर प्रदान कर सकता है। 3. मशीन अनुवाद- एक भाषा के दस्तावेज़ को मशीनी अनुवाद द्वारा आसानी से दूसरी भाषा में अनुवादित किया जा सकता है। आपकी पसंद के अनुसार दस्तावेज़ों और ग्रंथों का वांछित भाषा में अनुवाद करने में आपकी सहायता के लिए

कई एप्लिकेशन और वेबसाइटें उपलब्ध हैं।4. पाठ सारांश - पाठ सारांशीकरण तकनीक का उद्देश्य उन स्थितियों के लिए लंबे दस्तावेजों/पाठ के संक्षिप्त संस्करण तैयार करना है जहां संपूर्ण मूल पाठ को पढ़ने के लिए समय की अत्यधिक कमी है। सूचना अधिभार की समस्या से निपटने में पाठ सारांश महत्वपूर्ण है। फोटोकॉपियरों को अब टेक्स्ट सारांश के रूप में संयुक्त रूप से ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन और भाषा तकनीक की मदद से 20 पेज के दस्तावेज़ को उसके सारांश संस्करण के पांच पेज से भी कम में छोटा करने का निर्देश दिया जा सकता है।

भाषा प्रौद्योगिकी : रोजगार

भाषा प्रौद्योगिकी अपने आप में एक अंतरानुशासनिक विषय है, जो आज समस्त विश्व में रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है। अत: उन रोजगारों पर एक दृष्टि डालते है, "धारापथी व्यापार विश्लेषक, शिक्षा प्रशिक्षक, भाषा विशेषज्ञ , विश्व भाषा शिक्षक, द्वितीय भाषा शिक्षक, अनुसंधान विश्लेषक, सामग्री मोडरेटर, अनुदेशात्मक प्रौद्योगिकी प्रबंधक, भाषा मोडल इन्टर्न, डाटा विश्लेषक, डाटा वैज्ञानिक, द्विभाषी दुभाषिया, बायोडाटा लेखक, भाषा अधिकारी, अनुसंधान एवं साइकोमेट्रिक सेवा सहायक" आदि क्षेत्रों में भाषा प्रौद्योगिकी द्वारा रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष

वस्तुत: समय आ गया है कि हम सभी समझें और महसूस करें कि 'भाषा प्रौद्योगिकी' भविष्य के वर्षों में एक महत्वपूर्ण तकनीक है जो आने वाले वर्षों में कंप्यूटिंग में प्रगति करेगी। कोई उपयोगकर्ता वेब खोज इंजन से बात कर सकें और वह आवश्यक पाठ, लिंक या दस्तावेज़ को किसी अन्य भाषा से आपकी पसंद और पसंद की भाषा में अनूदित करके तुरंत वापस कर सके, इसमें ज्यादा समय नहीं लग रहा । भाषा तकनीक के क्षेत्र में उद्योग गतिविधि बढ़ रही है। दुनिया भर की प्रमुख आईटी कंपनियां भाषा प्रौद्योगिकी को और बेहतर बनाने और विकसित करने के लिए अपने प्रयासों पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। फलत: भाषा प्रौद्योगिकी के सन्दर्भ में चिंतन करने पर ज्ञात होता है कि कई माध्यम हैं जिनके कारन भाषिक रोजगार के अवसर बढ़ते जा रहें हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. मंगलदेव शास्त्री,तुलनात्मक भाषा शास्त्र अथवा भाषा विज्ञान, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद, पृष्ट 48
2. डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, पृष्ट 21
3. https://en.wikipedia.org
4. https://en.wikipedia.org
5. राम बंसल, कम्प्यूटरी सूचना प्रणाली विकास, वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली, पृष्ट 1